International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 2, Mar.-Apr, 2024, Impact Factor: 8.376

पंजाब के यथार्थवादी कलाकार : एक अध्ययन

राहुल[1], डॉ. पवन कुमार[2],

[1]शोधार्थी, ललित कला विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा
[2]निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, ललित कला विभाग, कुरूक्षेत्र, विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा

अमूर्त

भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर उत्तरी पश्चिम क्षेत्र पंजाब के रूप में जाना जाता है। चारों ओर से संस्कृति प्रदेशों के द्वारा घिरे होने के कारण पंजाब की कला संस्कृति साहित्य व संगीत पर इसका प्रभाव देखने को मिला। कला की प्रारंभिक स्थिति लोक कला के रूप में थी जो धीरे–धीरे परिष्कृत होकर आधुनिक रूप में यथार्थवादी भारतीय कला में अपना योगदान देने लगी।विभिन्न कालों में बने पंजाब शैली के यथार्थवादी चित्र ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।पंजाब में यथार्थवादी शैली पाश्चात्य देशों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भारत में आई व प्रत्येक कलाकार यथार्थवादी शैली द्वारा व्यक्तिगत व सामाजिक परिस्थितियों को किसी न किसी रूप में व्यक्त कर रहा है इनमें से कुछ कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है सरदार शोभा सिंह, कृपाल सिंह, जी. एस. सोहन सिंह और राही मोहिन्द्र सिंह यह सभी कलाकार तकनीक व विषयगत रूप से यथार्थवादी हैं पंजाब की संस्कृति की व्यक्ति चित्र सिख संत इत्यादि को चित्रित किया आज भी बहुत से कलाकार यथार्थवादी विषय वस्तु को अपनी आधुनिक कला शैली में चित्रित करते हैं प्राचीन समय से लेकर आज के युग में यथार्थवादी काला ने अपना अस्तित्व नहीं खोया चाहे वे विषय वस्तु हो या तकनीक हो यथार्थवादी कला शैली का अस्तित्व सभी कला शैली में रहा हैं ।

पंजाब की यथार्थवादी कला

भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र पंजाब के रूप में जाना जाता है ,जिसके आधार पर पजाब का नाम भौगोलिक दृष्टि से उस भूखण्ड अथवा प्रदेश से है। जिसमें पाँच नदियाँ बहती है। "पंजाब" का शाब्दिक अर्थ दो शब्दों का मिश्रण पंज (पाँच)आब (पानी) की संधि से मुस्लिम काल में फारसी भाषा के प्रभाव से बना । जिन पाँच नदियों के कारण इसका भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र पंजाब के रूप में जाना जाता है, जिसके आधार पर पंजाब का नाम "पंजाब" नामकरण किया गया था जिनमें झेलम, चिनाब, रावी, व्यास और सतलुज । ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्रदेश की पश्चिमी सीमा सिन्धु नदी तक रही है। यही कारण है। कि वैदिक काल में इस "सिन्धु" शब्द की धारा के अर्थ से सप्त सिन्धु के नाम से पुकारा जाता था।[1]

ऋग्वेद में सात नदियों में सिन्धु, वितस्ता (झेलम), असकानी (चिनाव) परूशनी (रावी), विपाश (व्यास), शतद्रा (सतलुज) तथा सरस्वती का वर्णन किया गया है। रामायण तथा महाभारत के युग में पंजाब को "पंचनद"के नाम से पुकारा गया तथा गुप्त काल में इसे "उत्तर पथ" का नाम दिया गया। यूनानियों ने पंजाब को "पेण्टापुटमिया" नाम रखा, जिसका अर्थ पाँच नदियों का प्रदेश है। सातवी शताब्दी ई० में पंजाब के बहुत बड़े भाग पर तुर्की कबीले का अधिकार था। उस समय इसे "तुर्की देश" कहा जाता था, और मध्य काल में इसे "सूबा–ए–लाहौर" के नाम से पुकारा जाता था। अंग्रेजों के समय में पंजाब को "पंजाब" कहा जाता था।[2] अंग्रेजी के उपनामों में "The Granary of India" or "The Bread Basket of India" के नाम से पंजाब को बुलाया जाता था, तथा पंजाब में रहने वाले लोगों को पंजाबी कहा जाता था व शताब्दी पूर्व इसे वहिक व अरता के नाम से भी सम्बोधित किया जाता रहा है।

[1]सिंह, बलवान, पंजाब का भू–सामरिक अध्ययनः लोकायत प्रकाशन, चण्डीगढ,1996,पृष्ठ संख्या 03
[2].मौनी, जी.सी. पंजाब का इतिहास तथा संस्कृति प्रकाशन,संस्करण 2006-07,पृष्ठ संख्या 01

चारों ओर से सांस्कृतिक प्रदेशों द्वारा घिरे होने के कारण पंजाब की कला, संस्कृति, साहित्य एवं संगीत पर इसका पर्याप्त प्रभाव देखने को मिलता है। कला की उत्पत्ति के लिए पंजाब की भूमि अति प्राचीन थी। समय बीतने के साथ–साथ यहाँ विभिन्न कलाओं का विकास हुआ। कला की प्रारम्भिक स्थिति लोक कला के रूप में थी, जो धीरे–धीरे परिष्कृत होकर आधुनिक रूप में (यथार्थवादी) भारतीय कला में अपना योगदान देने लगी। पंजाब की धरती पर ही भारत की सबसे प्राचीन तथा श्रेष्ठ संस्कृति का उदय हुआ, और यही पर उसका विकास हुआ। "आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व पंजाब तथा उसके आस–पास के प्रदेशों में सिन्धु घाटी की सभ्यता तथा हड़प्पा संस्कृति का उत्थान हुआ, जो प्राचीन भारत की सबसे महत्वपूर्ण सभ्यताओं में मानी जाती है, परन्तु भारत और पाकिस्तान के विभाजन के उपरान्त यह क्षेत्र पश्चिमी पाकिस्तान की सीमा में आ गया था[3]" शेष बचा भाग, जो अब भारत का अभिन्न अंग था, वो तत्कालीन कला एवं संस्कृति की परम्पराओं को अपने अन्दर समेटकर निरन्तर आगे बढ़ता रहा।,,

सन् 1600 ई0 तक पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह ने एक सुदृढ़, शक्तिशाली एवं वैभव–सम्पन्न सिक्ख राज्य स्थापित कर लिया था। लाहौर में उनके दरबार मुगल दरबार की शोभा से किसी भी भांति कम न थी ।[4]वहाँ अलंकरण की ओर भी ध्यान दिया गया था। उनके राज्य में स्त्रियाँ भी विशेष अवसरों पर आभूषण धारण करती थी, और उनकासामाजिक स्तर भी उन आभूषणों से ही आँका जाता था।

पंजाब शैली के प्रमुख संरक्षक महाराजा रणजीत सिंह थे, लेकिन महाराजा शेर सिह, महाराजा किशन सिंह, महाराजा नरेन्द्र सिह (पटियाला) तथा गुलाब सिंह, महाराजा खड़ग सिंह और महाराजा दिलीप सिंह आदि की भूमिका भी इसमें कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी। इन सभी शासकों का कला–प्रेम और उसके प्रति उनका योगदान इसके विकास का एक प्रमुख कारण रहे हैं। प्रमुख प्रतिष्ठानों एवं सर्वेक्षण के आधार पर इस शैली का स्वरूप पंजाब राज्य अभिलेखागार संग्रहालय, नई दिल्ली, चण्डीगढ़ संग्रहालय, बांगला साहिब गुरुद्वारा, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, गुरूद्वारा बाबा अटल साहिब, अमृतसर, गुरूद्वारा अनन्तपुर साहिब, पंजाब ऐतिहासिक अध्ययन विभाग (पुस्तकालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला) पंजाब कृषि विकास संग्रहालय, लुधियाना, गुरूद्वारा हरमिन्दर साहिब, अमृतसर व मोतीमहल पटियाला आदि है, जहाँ अन्य प्रतिष्ठानों के साथ उनको प्रमुखता के साथ माना जाता है। पंजाब में स्थित सभी गुरूद्वारों में चित्रों की संख्या इस बात की द्योतक रही है कि इनके प्रमुख शासक और धार्मिक गुरू इसमें विशेष रूचि लेते थे। यह मानना होगा कि गुरूओं और प्रमुख शासकों के व्यक्ति–चित्र और उनके आदर्शों और जीवन से सम्बन्धित यथार्थवादी चित्रों की भरमार है। इसके माध्यम से धार्मिक और सांस्कृतिक भावना को बल मिला है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में पाश्चात्य कला तथा वहाँ की तकनीक का प्रचार–प्रसार तेजी से हो रहा था। आधुनिक भारतीय चित्रकला में रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम प्रमुख रूप से सम्मिलित था, जिन्होंने विदेशी तकनीकों को अपनाकर अपने चित्रों में प्रयोग इसलिए उन्हें आधुनिक भारतीय चित्रकला का प्रथम चित्रकार कहा जाता है।आगे चलकर अमृता शेरगिल ने प्रभाववादी के अन्तर्गत आने वाली कला–शैली का प्रयोग करते हुए आकारों को सरलीकृत किया, जिसमें उनकी मानवाकृतियों को स्मारकीय स्वतंत्रता का उद्धान्त रूप प्राप्त हुआ। मुख्य रूप से रवीन्द्रनाथ टैगोर, गगनेन्द्र नाथ टैगोर, यामिनी राय व अमृता शेरगिल इन कलाकारों के कार्य ने अन्य कलाकारों को भी प्रभावित किया। चित्र मुख्यतः तैल रंगों में बड़े आकारों में बनने लगे। पाश्चात्य देशों में प्रयोग में आ रही नई–नई तकनीकी का प्रयोग भारतीय कलाकार भी करने लगे। प्रत्येक कलाकार की कृति व्यक्तिगत तथा समाजिक परिस्थितयों को किसी न किसी रूप व्यक्त कर रही थी

पुनः देखे तो भारतीय समकालीन यथार्थवादी कला में पंजाब के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनमें से यथार्थवादी शैली के कलाकार मुख्य रूप से सम्मिलित है। प्रमुख कलाकारों में सरदार सोभा सिंह, कृपाल सिंह, जी.एससोहन सिंह और राही मोहिंदर सिंह सम्मिलित है। उपरोक्त कलाकारों के कला–कार्यों के अध्ययन यह पता चलता है कि वर्तमान कला–जगत विषय के साथ–साथ यथार्थ तकनीक से उच्चस्तरीय है।ये सभी कलाकार तकनीकी व विषयगत रूप से यथार्थवादी है। इन सभी कलाकारोंके मुख्य विषय सिख गुरु व उनकी शौर्यगाथाएँ, युद्ध, व्यक्ति–चित्र, पंजाब की संस्कृति व दैनिक जन–जीवन हैं। ये पंजाब की समकालीन के

[3]सुरी, विद्यासागर, पंजाब का इतिहासः हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी, चंडीगढ़,,पृष्ठ संख्या 01
[4]ठाकुर देसराज, सिख, इतिहास: प्रामात्थान विद्यापीठ, राजस्थान,पृष्ठ संख्या 334

परिप्रेक्ष्य में मजबूत स्तम्भ हैं। इनकीविषय–वस्तु व तकनीक दोनों यथार्थवादी है। ये पंजाबकी समकालीन यथार्थवादी कला के परिप्रेक्ष्य में मजबूत स्तम्भ हैं।

पंजाब के यथार्थवादी कलाकार

सरदार शोभा सिंह

बीसवीं सदी के महानतम् भारतीययथार्थवादी कलाकारों में से एक सरदार शोभा सिंह का जन्म 29 नवंबर, 1901 को श्री हरगोबिंदपुर (गुरदासपुर), पंजाब, भारत में हुआ था। यहीं पर उन्होंने चित्र बनाना और तराशना सीखा। 1905 में उनकी मां बीबी अच्चन का देहांत हो गया। उनके पिता एस. देव सिंह का 1917 में निधन हो गया।[5] उन्होंने स्व–अभ्यास से पेंटिंग सीखी और उसमें महारत हासिल की। सरदार शोभा सिंह ड्राफ्ट्समैन के रूप में ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल हुए और इराक में विभिन्न स्थानों पर तैनात थे। उन्होंने यूरोपीय चित्रों का अध्ययन किया और अंग्रेजी चित्रकारों के कार्यों से प्रेरणा प्राप्त की । इनके चित्रों में आरम्भिक समय से ही यथार्थवादी शैली की छवि प्रतीत होती थी

1923 में, उन्होंने सेना छोड़ दी और अमृतसर लौट आए जहाँ उन्होंने अपना कला स्टूडियो खोला। उसी साल उन्होंने बैसाखी के दिन बीबी इंदर कौर से शादी की। उन्होंने अमृतसर, लाहौर (1926) और दिल्ली (1931) में अपने स्टूडियो से काम किया।[6] दिल्ली में, सरदार शोभा सिंह को कला प्रदर्शनियों में भाग लेने का अवसर मिला और पुरस्कार और पदक जीते। व्यक्ति–चित्र यथार्थवादीउनकी खासियत थी, उन्हें भारतीय राज्यों के कई शासकों के चित्र बनाने के लिए कमीशन दिया गया था।

कुछ समय पश्चात सरदार शोभा सिंह लाहौर वापस आ गए और अनारकली में अपना स्टूडियो खोला और एक फिल्म के लिए कला निर्देशक के रूप में काम कर रहे थे, जब 1947 मेंदेश के विभाजन के कारण उन्हें लाहौर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। वह एंड्रेटा को खाली हाथ लौट आए. हिमालय की गोद में बसा एक सुरम्य गाँव और यहाँ अंतिम समय तक रहा। 'अंद्रेटा में अपने 38 साल के प्रवास के दौरान, सरदार शोभा सिंह सैकड़ों यथार्थवादी शैली में पेंटिंग बनाई। उनका मुख्य फोकस सिख गुरु, उनका जीवन और कार्य था। गुरुओं का उनका चित्र दैवीय आत्माओं के प्रति उनकी भक्ति का प्रकटीकरण था[7] वह यथार्थ रूप में सिख गुरूओं की पेटिंग बनाते थे जिससे समाज धर्म के प्रति अग्रसर हो। उन्होंने सिख गुरु नानक देव जी को अपने ध्यान की अभिव्यक्ति के रूप में रखा। उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह को प्रेरणा अवतारश् के रूप में देखा। उन्होंने शहीद–ए–आजम भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, लाल बहादुर शास्त्री, महात्मा गांधी, आदि जैसे राष्ट्रीय नायकों के प्रभावशाली चित्रों को भी चित्रित किया और भारतीय युद्ध नायकों को भी चित्रित किया

चित्र संख्या -1

चित्र संख्या -2

सरदार शोभा सिंह ने पहली बार पंजाब की सबसे लोकप्रिय प्रेम कथाओं में से एक "सोहनी महिवाल" को चित्रित किया। इस पेंटिंग ने उन्हेंअपार प्रसिद्धि दिलाई। उन्होंने लगभग 5 बार इस चित्र को चित्रित किया था. और सरदार शोभा सिंह आर्ट गैलरी, अंद्रेटा, हिमाचलप्रदेश, भारत में देखा जा सकता है। सरदार शोभा सिंह ने

[5]रानी, सरोज द रियलिस्टिक आर्टिस्ट फ्रॉम पंजाबः लोकायत प्रकाशन,चंडीगढ़,पृष्ठ संख्या 16

[6]. रंधावा, एम.एस. बसौली पेंटिगः सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पृष्ठ संख्या 76

[7]. रंधावा, एम.एस. बसौली पेंटिगः सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पृष्ठ संख्या 26

पंजाब की अन्य प्रेम कहानियों पर भी काम किया। हीर रांझा, सस्सी–पुन्नुन, शिरीन फरहाद और मिर्जा साहिबान अन्य चित्रित किया

चित्रसंख्या - 3

और इसके अलावा एक और शानदार रचना प्रसिद्ध फारसी कवि उमर खय्याम का चित्रण है। सरदार शोभा सिंह ने नारीत्व की गरिमा का पूरा सम्मान किया। उन्होंने पंजाब और हिमाचल प्रदेश के लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली दुल्हनों की एक श्रृंखला को चित्रित किया। सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली पेंटिंग में से एक है, "हर ग्रेस द गड्डन"। उन्होंने यथार्थवादी शैली में कई लैंडस्केप्स को चित्रित किया। उन्होंने कुछ अच्छी मूर्तियां भी बनाईं जो शोभा सिंह संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। एस. शोभा सिंह को उनकी कला के लिए व्यापक प्रशंसा मिली, जिसका उन्होंने जीवन भर सख्ती से पालन किया। उन्हें कई पुरस्कार मिले और कई संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कारों में से एक पदमश्री सम्मानित किया गया था। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने उनके 75 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक वृत्तचित्र फिल्म "पेंटर ऑफ पीपल" जारी की। बीबीसी, लंदन ने उन पर एक वृत्तचित्र भी बनाया। उन्हें पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा डी. लिट (मानद) की उपाधि से सम्मानित किया गया। पंजाब की यथार्थवादी शैली के चित्रकार सरदार शोभा सिंह का देहान्त 22 अगस्त 1986 को चंडीगढ़ में हुआ। और पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया।.स्मारिका प्रकाशित की गई थी। भारत सरकार ने उन पर एक स्मारक डाक टिकट, प्रथम दिवस कवर और सूचना विवरणिका जारी की। पंजाब और हिमाचल प्रदेश ने सरदार शोभा सिंह कला पुरस्कारों की स्थापना की। पंजाब के इस यथार्थवादी कलाकार ने अपने चित्रों के माध्यम से समाज में धर्म के प्रति रूझान बढ़ाया और कला के शिखर तक पहुँचे यथार्थवादी शैली में इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता

कृपाल सिंह

कलाकार कृपाल सिंह का जन्म पंजाब के फिरोजपूर जिले के वारा चौन सिंह नाम गांव में 10 दिसंबर 1923 में हुआ इनकी माता का नाम बीबी हर कौर एक धर्मपरायण महिला और इनके पिता का नाम सरदार भगत सिंह था। इस मेहनती और प्रतिभाशाली व्यक्ति के पिता थे, बहुत प्रसिद्ध शिल्पकार जो लकड़ी की नक्काशी, उत्कीर्णन और डिजाइनिंग में कुशल थे। जीरा (पंजाब) में प्रसिद्ध जैन मंदिर जिसमें एक शानदार लकड़ी का गेट है, जटिल और उत्तम कार्य उनके पिता के शिल्प कौशल का बेजोड़ उदाहरण है[8] बचपन में, उन्हें प्राकृतिक सुंदरता का बहुत शौक था और उनका अधिकांश समय प्रकृति को देखने में बीतता था। गाँव की उन महिलाओं का अवलोकन करना जो अपने चरखे में व्यस्त थीं और इसमें लगी हुई रहती थीं इन्हें रंगों से बहुत प्यार करता है और वह उसे आसानी से एक उत्साही प्रेमी के रूप में वर्णित कर सकता है इन्हें रंगों को अपने काफी समीप से महसूस किया और उनसे प्रेरित हुए। अपने पर कुछ अभिनव और रचनात्मक करने की कामना की अपने और यह जुनून उनके अपने शब्दों में व्यक्त किया गया है, "मुझे अपनी उंगलियों का उपयोग करने

[8]रंधावा, एम.एस. बसौली पेंटिग : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पृष्ठ संख्या 26

खुजली हो रही थी कुछ खींचकर या कुछ कच्चे चित्र बनाकर"। मैट्रिक पास करने के बाद, वह लाहौर चले गए और वहां धर्म कॉलेज में प्रवेश लिया। उन्होंने फोरेंसिक साइंस में स्नातक की पढ़ाई पूरी की और लिपिक पद पर काम करना शुरू किया।[9] सिखों के बलिदान, जब उन्होंने लाहौर में कुछ गुरुद्वारों अर्थात् गुरुद्वारा भाई का दौरा किया। जिनमें मुख्यत तरु सिंह, भाई मणि सिंह व डेरा साहिब, शेषगंज। सरदार कृपाल सिंह ने एक छात्र के रूप में सिख इतिहास के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने में काफी समय लगाया। लाहौर में महाराजा रणजीत सिंह केजन्म समारोह का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला। उन्होंने सिख इतिहास के बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए हर समय समर्पित किया। उन्होंने हमेशा पेंटिंग करने के अपने जुनून के लिए समय निकाला और उन्होंने अपने पसंदीदा माध्यम में यथार्थवादी परिदृश्य और मानव आकृतियों को चित्रित करना जारी रखा। वे शुरूआती समय से ही यथार्थवादी कलाशैली से अत्यधिक प्रभावित थे। "18 साल की उम्र में उनका विवाह कुलदीप कौर से कर दिया गया। इनके दो बेटे और एक बेटी थी। उनका छोटा बेटा जरनैल सिंह ने भी चित्रकारी पेशे को चुना और उसका पालन किया जो उसे विरासत में मिला था। अगस्त 1947 में कृपाल सिंह जालंधर में आकर बस गए एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में महान रूसी कलाकारों की प्रतिकृतियां देखने का अवसर मिला।[10] यहां से यथार्थवादी शैली में पूर्ण रूप से इनका सफर शुरू हुआ।

जालंधर में कृपाल सिंह भी अद्भुत कलाकार माइकल एंजेलो, लियोनार्डो दा विंची और रूबेन्स जैसे इतालवी पुनर्जागरण कलाकारों के कार्यों से काफी प्रभावित हुए। इन उत्कृष्ट कलाकारों और उनके फोटो–यथार्थवादी तरीके से गहराई से मंत्रमुग्ध कार्यों ने उनके मन और हृदय पर अमिट छाप छोड़ी।[11] कुछ समय पश्चात इन्होंने प्रिंसिपल संत रियान ग्रोवर के समर्थन और योग्य संरक्षण के साथ, उन्हें दयाल सिंह कॉलेज, करनाल में अपने पहले एकल के रूप में अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित करने का अवसर मिला कला प्रदर्शनी। काम उन्होंने सिख धर्म की सच्ची तस्वीर और शहादत की परंपरा का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश की अपने संवेदनशील कार्यों के माध्यम से इस बहादुर और निडर समुदाय का यथाथवादी चित्रण किया जो अब है। अमृतसर में केंद्रीय सिख संग्रहालय, श्री दरबार साहिब की दीवारों पर सजी। उस समय उन्हें वहां एक कलाकार के रूप में अपनी सेवाओं के लिए वेतन के रूप में केवल 250 रुपये मिलते थे।[12]

चित्र संख्या – 4

चित्र संख्या - 5

उनकी महत्वपूर्ण मंत्रमुग्ध करने वाली पेंटिंग जो पंजाब के कई संग्रहालय में प्रदर्शित हैं, मुगल शासन के दौरान पुरुषों और महिलाओं हमें अतीत में झाँकने में मदद करता है और महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में हमें राजपरिवार और भव्यता की विशद झलक प्रदान करता है। जिसमें मुगल शासकों द्वारा सिख संतों पर अमानवीय व्यवहार करते दिखाया गया है। यह सब दृश्य इन्होंने अपने चित्रों में यथार्थ रूप से व्यक्त किया है उनकी पीड़ा को अपनें रंगो व रेखाओं द्वारा दर्शाया है। यह सूफीवाद के प्रति सम्मान और समर्पित और अपना शेष जीवन सूफी विचारों के साथ बिताया। उनके काम है। निम्नलिखित गुरुद्वारों में प्रदर्शित किया जाता है जैसे अमृतसर में स्वर्ण मंदिर, गुरु तेघ बहादुर निवास जो गुरुजी की शहादत के सम्मान और स्मरण में बनाया

[9]अजबय, पंजाबी चित्रकार (पंजाबी)रू प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियालापृष्ठ संख्या 94

[10]रंधावा, एम.एस. कृपाल सिंह इतिहास को जीवंत करने वाले कलाकार पंजाब का द ट्रिब्यूनपृष्ठ संख्या 36

[11]केसर, उर्मीय ट्वेंटिएथ सेंचुरी सिख पेंटिंगरू द प्रेजेंस ऑफ अतीतः प्रकाशक सिख कला में नई अंतर्दृष्टि, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 126

[12]सिंह, मेजर गुरमुख कलाकार कृपाल सिंहः प्रकाशन हरबंस सिंह, एड शिख धर्म का विश्वकोश, द्वितीय सस्करण, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पृष्ठ संख्या 513 -514

गया था गुरुद्वारा सीस गंज व नई दिल्ली में गुरुद्वारा बंगला साहिब में अपनी यथार्थवाद कलात्मक गुणवत्ता के अलावा, वह पढ़ने के बहुत शौकीन थे और हमेशा उत्सुक रहते थे।

चित्र संख्या – 6

सिख इतिहास के बारे में विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करते थे। अपने जुनून को बनाए रखने के लिए जीवित, उन्होंने व्यक्तिगत पुस्तकालय के रूप में सिख इतिहास के खजाने को संरक्षित किया और अपने इस कार्य से इन्हें सम्मानित भी किया गया। उनके पुस्तकालय में भारतीय इतिहास और कला पर दुर्लभ और असाधारण पुस्तकों का संग्रह है। वह हमेशा अपने चित्रों को गहन अवलोकन और इन योग्य टुकड़ों के अध्ययन के साथ चित्रित किया ज्ञान और कार्यान्वयन और आवश्यक स्थानों पर उन तथ्यों यथार्थ रूप से अपने चित्रों में प्रतिबिंबित करने का प्रयास किया। उन्होंने किसी भी कलाकृति को बनाने से पहले इसे अपनी आदत बना ली थी, उन्हें उससे संबंधित एक किताब जरूर पढ़नी चाहिए। कलाकृति का विशेष टुकड़ा और चाहे वह मुगल, राजपूत, सिख या कंपनी हो चित्रकला की शैली में उन्होंने हर पहलू की प्रामाणिकता को बनाए रखने में बहुत सावधानी बरती। कलाकार किरपाल सिंह को कभी भी व्यावसायिक कला में दिलचस्पी नहीं थी। वह जो समाज व सिख गुरूओं की प्राचीन समय की दशा को यथार्थ रूप में चित्रित करते थे। बल्कि अपनी जीविका कमाने के लिए, उन्होंने ऐसा करना पड़ा, वह जहाँ भी रहे। उन्होंने सोच–समझकर पेंट करना शुरू किया। उन्होंने मुख्य रूप से गाँव की उन महिलाओं पर काम किया जिन्हें महिला– प्रत्यारोपण जैसे क्षेत्रों में काम करते हुए दिखाया गया था धान और एक अन्य महत्वपूर्ण विषयों को चित्रित किया । सरदार इंद्रजीत के बाद सिंह के प्रस्ताव पर कृपाल सिंह ने सिख इतिहास, कला और से संबंधित विषयों पर काम यथार्थवादी शैली में शुरू किया। वह सेना के कई अधिकारियों से भी परिचित हुआ जिन्होंने उन्हें काम सौंपा। उनकी बारह अद्भुत कृतियाँ मेरठ छावनी स्थित सेना संग्रहालय में प्रदर्शित हैं जिसमें उन्होंने भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान सिख सैनिकों की वीरता को दिखाया है।[13]

कलाकार कृपाल सिंह बहुत भाग्यशाली थे। इन चित्र आकार में स्मारकीय हैं और भारत में अब तक चित्रित सबसे बड़े चित्रों में से एक हैं। इतने बड़े आकार के कैनवस को पेंट करने के लिए, कलाकार को बाहर एक विशाल तम्बू बनाना पड़ा उनका निवास था, और उन्होंने इस काम को तीन साल में पूरा किया। ये पेंटिंग एक तरह की गाथा हैं बहादुर सिख सैनिकों की और अंग्रेजों के साथ सिखों की लड़ाई का भी खुलासा करते हैं। उद्घाटन अवसर पर अप्रैल 1976 में इस युद्ध स्मारक में, हर कोने से बेशुमार लोग इकट्ठा हुए पंजाब के सिख शहीदों और विभिन्न महत्वपूर्ण विभागों के मंत्रियों को श्रद्धांजलि देने के लिए पंजाब सरकार और उप रक्षा मंत्री, भारत सरकार का भुगतान करने के लिए आया था उनकी श्रद्धांजलि और थल सेना, नौसेना और वायु सेना के तीनों प्रमुखों ने स्मारक को सलामी दी।

जी.एस सोहन सिंह

कलाकार जी.एस. सोहन सिंह का जन्म अगस्त 1914 में हुआ था । कला में उनकी रुचि उनके प्रतिभाशाली कलाकार पिता एस. जियान सिंह नक्काश द गोल्डन टेम्पल, अमृतसर के फ्रेस्को कलाकार से विरासत में मिली

[13] रंधावा, एम.एस. कृपाल सिंह इतिहास को जीवंत करने वाले कलाकार पंजाब का द ट्रिब्यून

थी।[14] और बाद में पिता और पुत्र दोनों ने धार्मिक विषयों को चित्रित करना, छात्रों के लिए चार्ट तैयार करना और साथ ही चित्र बनाना शुरू कर दिया था। इस प्रकार जीवन का पहिया धीरे–धीरे लेकिन निश्चित रूप से कला के मार्ग पर चलने लगा। 1932 में कलाकार द्वारा मुद्रित और विपणन किया गया पहला बहु–रंगीन डिजाइन निडर नायक बाबा बंदा सिंह बहादुर का था। इसकीलोकप्रियता से उत्साहित होकर, कलाकार ने हर साल लगभग 3 नए डिजाइन तैयार किए। लाहौर में अपने ब्लॉक तैयार करवाए, उन्हें मुद्रित किया और उनका विपणन किया।[15] कलाकार की कारीगरी का मानक आम तौर पर बाजार में अन्य धार्मिक चित्रों के साथ संगत से अधिक था, और इसने उनका नाम "जी. एस. सोहन सिंह"कला की दुनिया में सुर्खियों में ला दिया, और उन्हें अक्सर असाइनमेंट मिलने लगे। कुछ समय तक वे चित्रों को तैयार करने, कांच की भारतीय और विदेशी प्रतिकृतियां थोक के साथ–साथ खुदरा बिक्री में भी अपनी कला का काम कर रहे थे। धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण और स्वभाव से ईश्वर से डरने वाले और व्यवसाय के मशीनीकरण से अनभिज्ञ होने के कारण वह दोनों सिरों को पूरा कर रहा था। कलाकार को स्थानीय भाषा के पेपर अजीत और वीर भारत(लाहौर के) और अमृतसर के शेर भारत और अन्य पत्रिकाओं के अलावा, लेबल और अन्य पत्रिकाओं से कमीशन मिलना शुरू हो गया। औद्योगिक क्षेत्र से बक्से के लिए डिजाइन।

कलाकार की माँ (1951) और पिता (1953) की मृत्यु ने कलाकार के मन में गहरा अवसाद पैदा कर दिया। हालांकि, कवि, लेखक और कला समीक्षक ज्ञानी हरिंदर सिंह "रूप" के कहने पर, कलाकार ने अपने दिवंगत पिता के कुछ उत्कृष्ट कार्यों को पुस्तक रूप में संकलित करने का मन बना लिया। वे कुछ समय के लिए कलाकार पी. वर्मा के अन्तर्गत आए व कार्य किया, जिनकी कार्यशैली से वे काफी प्रभावित थे। इससे कलाकार को ब्लॉक लाइन में दक्षता हासिल करने का अवसर मिला। यह तकनीक उन्होंने अपने बेटे श्री सुरिंदर सिंह को दी है, जो लाइन ब्लॉक, मोनोक्रोम और ट्राई कलर हाफटोन ब्लॉक, फोटोग्राफी आदि के विशेषज्ञों में शुमार हैं।[16] कलाकार कला के क्षेत्र में विविध विषयों का सामना किया है।

चित्र संख्या – 7

चित्र संख्या - 8

उन्होंने स्थानीय अखाड़ों से कमीशन लिया। जिसमें संतों और धार्मिक नेताओं के जीवन से जुड़े एपिसोड के दृश्यों का चित्रण किया गया था–कला कार्य में एक दुर्लभ विशेषता।उन्हें देश के बाहर समय–समय पर आयोजित कई कला प्रदर्शनियों में उनके द्वारा जीते गए दर्जनों स्वर्ण और रजत पदक, नकद पुरस्कार के साथ–साथ प्रमाणपत्रों की प्रशंसा भी मिली है। अप्रैल, 1968 में, पंजाबी को इस क्षेत्र के लिए राज्य भाषा का गौरव प्रदान करने अवसर पर, कलाकार को 500 रु और साथ ही चंडीगढ़ में एक मास्टर कलाकार के रूप में उनकी सेवा की मान्यता में योग्यता का प्रमाण पत्र।कई वर्षों तक उन्होंने भारतीय ललित कला अकादमी, अमृतसर के शासी निकाय के सदस्य और आजीवन सदस्य के रूप में काम किया और चयनित प्रदर्शनों पर पुरस्कार देने के लिए एक न्यायाधीश के रूप में काम किया। उन्होंने समय–समय पर रामगढ़िया ब्रदरहुड, अमृतसर (रजि.) के अध्यक्ष और महासचिव के पद पर कार्य किया।[17] उन्होंने एक नियमित स्टूडियो चलाया जो अब ब्रह्म बूटा मार्केट, सराय गुरु राम दास के पास, स्वर्ण मंदिर परिसर, अमृतसर में स्थित है कलाकार के

[14]सुरी, विद्यासागर पंजाब का इतिहासः हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी,चंडीगढ़, पृष्ठ संख्या 80

[15]सुरी, विद्यासागर पंजाब का इतिहासः हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी,चंडीगढ़, पृष्ठ संख्या 75

[16]रंधावा एम.एस. सिख पेंटिंग प्रकाशन रूपलेखा, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 39

[17]श्रीवास्तव आर.पी. गुरु गोबिंद सिंह इन इंडियन आर्टः प्रकाशक सिख कॉरिएर पृष्ठ संख्या 46

तीन बेटे और दो बेटियां थीं। उनके सबसे बड़े बेटे सुरिंदर सिंह एक ग्राफिक कलाकार हैं। 28 फरवरी 1999 को पंजाब के यथार्थवादी कलाकार का देहांत हो गया था ।

राही मोहिंदर सिंह

यथार्थवादी कलाकार राही मोहिंदर सिंह का जन्म 9 मई 1965 में भरौली कला पठानकोट जिला गुरदासपुर पंजाब में हुआ यह सामान्य परिवार से संबंध रखते थे इनके पिताजी पेशे से एक फोटोग्राफर थे वह दादाजी पेशे से किसान थे ये अपने दादाजी से अत्यधिक प्रभावित थे इनके दादा जी ने कार्पेटर के रूप में भी कार्य किया है इसका प्रभाव राही महेंद्र सिंह पर बचपन से ही था यह बचपन मिट्टी में लकड़ी के खिलौने बनाते थे उन्हें बेच देते थे।इन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा दीक्षा अपने पैतृक गांव से ही प्राप्त की बाद में यह पठानकोट शिक्षा प्राप्त करने चले गए स्कूल शिक्षा समाप्त होने के बाद उन्होंने 2 साल तक कला का कार्य आरंभ रखा है यह शुरुआत से ही यथार्थवादी कला से प्रभावित रहे इसके बाद कला की शिक्षा के लिए इन्होंने चंडीगढ़ गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की

1983 में इन्हें हिमाचल प्रदेश के अंतर्गत प्रखंड कलाकार सरदार शोभा सिंह से मिलने का मौका मिला यह सरदार शोभा सिंह के कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए जो यथार्थवादी शैली में किए गए थे। और इन्होंने यथार्थवादी शैली में कार्य प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय के पश्चात समाज में कलाकार के रूप में ने पहचान मिलने लगी थी यह अपनी कला की शुरुआत से ही सरदार शोभा सिंह को अपना कला गुरु मानते हैं कुछ समय पश्चात उन्होंने स्थानीय कान्वेंट स्कूल द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी में भाग लिया जहां इनके लगभग सभी चित्र बिक गए थे। अपनी स्नातक की परीक्षा के साथ इन्होंने इंडियन एक्सप्रेस में काम करना शुरू कर दिया था आर्ट कॉलेज के दौरान उन्होंने पश्चिम कलाकारों के यथार्थवादी शैली के कार्य देखें जिनमें रूबेंस माइकल एंजेलो लियोर्नादो द विंची व सिंगर सर्जेंट आदि कलाकार सम्मिलित हैं। वह इन कलाकारों के कान से काफी प्रभावित भी हुए राही मोहिन्द्र सिंह शुरुआती समय से ही तेल चित्र की तरफ काफीआकर्षित थे। इन्हें व्यक्ति–चित्र, पंजाब की संस्कृति व सिख गुरु की गाथाओं इत्यादि विषय वस्तु को चित्रित किया है। 1994 में इन्हें पंजाब के युद्ध के नायकों के चित्र चित्र करने का अवसर लुधियाना में युद्ध संग्रहालय द्वारा कमीशन किया गया इन्होंने राष्ट्रपति सचिवालय राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली द्वारा तीन बार सम्मान पूर्वक कमीशन किया है भारत के 14वें 13वें और 12वें राष्ट्रपति के आधिकारिक चित्रों को चित्रित किया है

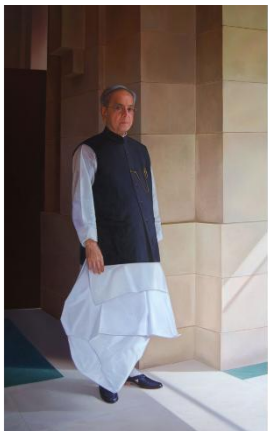

चित्र संख्या – 9 चित्र संख्या - 10

राही मोहिंदर सिंह के काम करने की तकनीक यथार्थवादी है यह कलाकार ज्यादातर तेल माध्यम में अपने चित्रों को बनाता है और जैसा हमें दिखाई प्रतीत होता है। यह यथार्थ रूप में ही उस विषय वस्तु का चित्रण करता है यह व्यक्ति चित्र में निपुण यथार्थवादी कलाकार है इन्होंने सिख इतिहास पर बहुत से व्यक्ति चित्र व पेंटिंग्स की है यह गांव व शहर दोनों से परिचित होने के कारण वहां का दृश्य इनकी पेंटिंग्स में भी प्रतीत होता है जैसा पंजाब के खेत रेलगाड़ियां बैल पानी के तालाब में व पारंपरिक रूप से कपड़े पहने पुरुषों के साथइन्होंने पंजाब की आधुनिक यथार्थवादी काला को एक नया आयाम दिया इन्होंने पंजाब के दैनिक जनजीवन त्योहार संस्कृति व धार्मिक संतो को यथार्थ रूप में चित्रित किया

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. सिंह, बलवान, पंजाब का भू–सामरिक अध्ययनः लोकायत प्रकाशन, चण्डीगढ,1996
[2]. मौनी, जी.सी. पंजाब का इतिहास तथा संस्कृति प्रकाशन, संस्करण 2006-07
[3]. सुरी, विद्यासागर, पंजाब का इतिहासः हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी, चंडीगढ
[4]. ठाकुर देसराज, सिख, इतिहास: प्रामात्थान विद्यापीठ, राजस्थान
[5]. रानी, सरोज द रियलिस्टिक आर्टिस्ट फ्रॉम पंजाब : लोकायत प्रकाशन, चंडीगढ
[6]. रंधावा, एम.एस. बसौली पेंटिग : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
[7]. रंधावा, एम.एस. कृपाल सिंह इतिहास को जीवंत करने वाले कलाकार पंजाब का द ट्रिब्यून
[8]. रंधावा, एम.एस. बसौली पेंटिग : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
[9]. अजबय, पंजाबी चित्रकार (पंजाबी)रू प्रकाशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
[10]. रंधावा, एम.एस. कृपाल सिंह इतिहास को जीवंत करने वाले कलाकार पंजाब का द ट्रिब्यून
[11]. केसर, उर्मीय ट्वेंटिएथ सेंचुरी सिख पेंटिंगरू द प्रेजेंस ऑफ अतीतः प्रकाशक सिख कला में नई अंतर्दृष्टि, नई दिल्ली
[12]. रंधावा एम.एस. सिख पेंटिंग प्रकाशन रूपलेखा, नई दिल्ली
[13]. श्रीवास्तव आर.पी. गुरु गोबिंद सिंह इन इंडियन आर्टः प्रकाशक सिख कॉरिएर
[14]. सुरी, विद्यासागर पंजाब का इतिहासः हरियाणा हिंदी ग्रन्थ अकादमी, चंडीगढ

वेबसाइट संदर्भ

[1]. http://eknowledgehub.blogspot.com/2012/08/traitor-vs-patriot-sobha-singh-vs.html
[2]. https://www.tribuneindia.com/news/arts/a-bygone-era-on-canvas-at-sg-thakar-gallery-in amritsar-293869
[3]. http://www.sobhasinghartist.com/romantic-theme.htmlhttps://indiathedestiny.com/indian-kings/maharaja-ranjit-singh
[4]. http://anubooks.com/wp-content/uploads/2019/03/AN-Vol-IX-No-2-2018-4.pdf
[5]. http://www.sikh-heritage.co.uk/arts/sohan singh/gssohansingh.htm
[6]. https://rmsingh.com/?page_id=15.ibdi